4

मसीह से रिश्ता

(यूहन्ना 15:1-11)

बदला हुआ जीवन मसीह के साथ एकता में जिया हुआ जीवन है ...।

आपने ''फ्रैंच कनेक्शन'' सुना है। यूहन्ना 15:1-11 ''मसीह से कनेक्शन'' के बारे में है। दाखलता और टहनियों की बात करते हुए यीशु ने ज़ोर देकर कहा था कि हम उससे जुड़े हुए हैं। हमें उसी संदेश की आवश्यकता है।

कलीसिया मसीह के साथ हमारे कनेक्शन यानी रिश्ते ज़ोर देने की बात में चूक कर सकती है। कई साल पहले जेम्स ओ. बेयर्ड ने लिखा:

> मेरे साथ यह होता है कि कलीसिया को मसीह के और समर्पण को समझना या बड़ती सांसारिकता और आत्मिक उदासीनता के आवश्यक परिणामों को भोगना होगा। मसीह को बीच में रखने पर ही मसीही जीवन के नियमों को जिसे बाइबल मिलाती है, लम्बे समय तक रख सकने वाला गतिशील परिवर्तनीय बल होता है। एक उद्धारकर्त्ता के साथ निजी सम्बन्ध होने पर ही पाप से घृणा करने, और मसीही समर्पण व बलिदान की आत्मिक संवेदनशीलता आती है।

1951 में रू पोर्टर ने लिखा:

> ... हम प्रचारक सुसमाचार वाले मसीह पर जोर देने के बजाय मसीह के सुसमाचार पर अधिक जोर दे रहे हैं ...। परमेश्वर की सारी सच्चाई मसीह में और उसी के ऊपर केन्द्रित है। यानी सच्चाई का काम मसीह के ज्ञान के लिए अनिवार्य होने की बात पक्की है; परन्तु यह कि *उस मसीह को जानना* जिसके जीवन और स्वभाव के बारे में हमें सुसमाचार के द्वारा बताया गया है उतना ही आवश्यक है।[1]

हमारे धर्म में केवल डॉक्ट्रिन ही नहीं है। न यह केवल भलाई करने या दूसरों की सहायता करने तक सीमित है। न यह गिरजा-घर (चर्च बिल्डिंग) में दर्शन करने के लिए जाने वाला है। हमारा धर्म परमेश्वर को प्रसन्न करना है, और यह हमारे प्रभु के साथ निकट सम्बन्ध बनाने वाला होना आवश्यक है; मसीह ही मसीहियत का कर्त्ता और पूर्ण करने वाला, आरम्भ और अन्त, केन्द्र और घेरा है। यदि हम उसकी नज़दीकी में अर्थात अपने जीवनों में मसीह की जागरूकता के साथ *नहीं* रह रहे हैं तो हमारा धर्म वह नहीं है जो होना चाहिए था।

अपने आप को मसीह के और निकट लाने में सहायता के लिए मसीह से कनेक्शन के सम्बन्ध में 15:1-11 की शिक्षा पर विचार करते हैं।

हर मसीही और मसीह के बीच निकट सम्बन्ध

मसीह किसी मसीही के कितना निकट है? जितना निकट असली दाख के दाख की टहनी होती है! यीशु यह कहते हुए आरम्भ करता है, ''सच्ची दाखलता मैं हूं, और मेरा पिता किसान है'' (यूहन्ना 15:1)। बाद में वह कहता है, ''मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो'' (यूहन्ना 15:5)। अंगूर की दाख पर विचार करें; टहनियां दाख के कितनी नज़दीक होती हैं? वे उसके इतना निकट होती हैं कि उन में अन्तर करना कठिन होता है। मसीह मसीही लोगों से इतना ही निकटता से जुड़ा है!

नया नियम हर जगह इसी निकटता पर ज़ोर देता है। मसीही बनने पर हम ''मसीह यीशु में बपतिस्मा'' लेते हैं और बपतिस्मा में हम ''उसके साथ गाड़े ...'' जाते हैं और ''जैसे मसीह ... मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलते हैं'' (रोमियों 6:3-5)। पौलुस यह भी कहता है कि ''मसीह में बपतिस्मा'' लेने पर हम ''मसीह को पहिन'' लेते हैं (गलातियों 3:27)। मसीही लोगों के रूप में, हम कह सकते हैं,

> अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है (गलातियों 2:20)।
>
> मेरे लिए जीवित रहना मसीह है (फिलिप्पियों 1:21)।
>
> क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं; सो हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के हैं (रोमियों 14:8)।
>
> ... [हमारा] जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है (कुलुस्सियों 3:3)।
>
> मसीह जो महिमा की आशा है [हम] में रहता है (कुलुस्सियों 1:27)।

हमें इस तथ्य की सराहना भी करनी आवश्यक है कि यह निकटता निजी मामला है। हर *मसीही* एक डाली है! यूहन्ना 15:6 में यीशु की बात पर ध्यान दें: ''यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोर कर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं'' (यूहन्ना 15:6)। कोई ''डाली की नाईं ...'' फैंका जाता है। हर कोई डाली है। इसलिए डालियां निजी लोगों को कहा गया है न कि कलीसियाओं या उनके समूह को। किसी मसीही से पूछा गया कि वह किस कलीसिया का सदस्य है। उसने उत्तर दिया, ''कलीसिया का।'' पूछने वाले को समझ नहीं आया और उसने पूछा, ''पर किस कलीसिया का?'' ''कलीसिया का ही।'' ''नहीं, नहीं, मैं जानता हूं कि आप विश्वव्यापी कलीसिया के सदस्य हैं, परन्तु आप किस कलीसिया की किस शाखा के सदस्य हैं?'' मसीही व्यक्ति का उत्तर था, ''मैं किसी शाखा का नहीं हूं बल्कि मैं तो स्वयं शाखा हूं!'' बिल्कुल सही है। हर मसीही अपने आप में शाखा है!

इस विचार के व्यावहारिक अर्थ हैं। इसका अर्थ है कि मसीह के साथ आपका सम्बन्ध किसी दूसरे पर निर्भर नहीं है यानी हम कलीसिया के रूप में नहीं बल्कि लोगों के रूप में मसीह से जुड़े हैं। आपको किसी ऑरडेन किए हुए प्रीस्ट या संतनुमा मध्यस्थ के द्वारा मसीह के पास आने की आवश्यकता नहीं है। न ही आप को मसीह तक पहुंच करने के लिए अपने पास्टर से

अच्छे सम्बन्ध बनाने आवश्यक हैं। मसीह के साथ आप का सम्बन्ध मेरे, ऐल्डरों या किसी भी दूसरे व्यक्ति पर निर्भर नहीं है। यह आप पर निर्भर है।

मसीह के साथ उस निकट सम्बन्ध बनाए रखने की आवश्यकता

वचन स्पष्टता से कहता है कि मसीह के साथ हमारा निकट सम्बन्ध टूट सकता है: ''यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोर कर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं'' (यूहन्ना 15:6)। इसलिए वह सम्बन्ध बनाए रखना हमारे ऊपर है। यूहन्ना हमें उस में बने रहने की आवश्यकता बताकर बार बार यही कहता है:

> तुम मुझ में बने रहो, ... (यूहन्ना 15:4)।
>
> मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, ... (यूहन्ना 15:5)।
>
> यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता है, ... (यूहन्ना 15:6)।
>
> यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा (यूहन्ना 15:7)।
>
> यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे ... (यूहन्ना 15:10)।

मसीह में बने रहो! यह आज्ञा है! यह हमें बताती है कि हमारा मसीह के निकट रहना या न रहना मसीह के ऊपर नहीं बल्कि हमारे ऊपर निर्भर है! यदि हमें बहुत आत्मिक महसूस नहीं होता, यदि हमें लगता है कि हम मसीह से बहुत दूर हैं, तो हमें पक्का पता है कि यह मसीह की इच्छा से नहीं है! बल्कि इसलिए है क्योंकि हम उस में बने रहने में नाकाम रहे हैं।

परन्तु आप अपने प्रभु के साथ निकट सम्बन्ध कैसे बनाए रख सकते हैं? कई तरीके सुझाए जा सकते हैं:

मसीह के बारे में पढ़ें और जो पढ़ते हैं उस पर मनन करें। सुसमाचार की पुस्तकों को पढ़ते रहें, तो आप मसीह से और अधिक प्रेम करना सीख जाएंगे।

कलीसिया की अराधना सभाओं में और अपनी पारिवारिक प्रार्थनाओं में *मसीह को महिमा* दें। महिमा देना भक्ति की बाहरी अभिव्यक्ति है और जितना उसे सराहेंगे उतना ही हम उसके जैसे बनते जाएंगे।

जहां आपको यीशु के बारे में पता चल सकता है वहां आराधना में भाग लें-रविवार की बाइबल क्लास, रविवार प्रात: की आराधना सभा, रविवार सांय और बुधवार सांय की आराधना सभा। मुझे नहीं लगता कि मसीह के और से और निकट आने की इच्छा करने वाला व्यक्ति जान बूझ कर अपने आप को उन सभाओं से अनुपस्थित रखेगा जहां मसीह और उसके वचन की बात बताई जाती है।

उन लोगों के साथ रहें जो मसीह जैसे बनने की कोशिश कर रहे हैं। उनके उदाहरण से आप में निखार आएगा। यह भी सही है कि यदि आप अपना अधिकतर समय उन लोगों के साथ बिताते हैं जिनका जीवन मसीह के मार्ग से मसीह के ढंग के विपरीत है, तो आप उन्हीं के नमूने का अनुसरण करने लगेंगे। यह आज भी सत्य है कि ''बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है'' (1 कुरिन्थियों 15:33)।

मसीह के अनुसार अपने जीवन को ढालने का सोच समझ कर प्रयास करें, उसके पदचिह्नों पर चलने का (1 पतरस 2:21), जैसे चार्ल्स शेल्डन की पुस्तक *इन हिज़ स्टेप्स* में लोग यह निश्चय लेते हैं पुस्तक वाले लोगों की तरह यह सुनिश्चित करें कि आप पहले यह पूछे बिना कि ''यीशु क्या करता?'' कुछ नहीं करेंगे।

मसीह पर विचार करें। जो लोग दूसरों को सफल होने का ढंग सिखाते हैं वे यही बात कहते हैं: ''जो कुछ दिन भर जो कुछ आप सोचते हैं, वही बन जाते हैं।'' यदि हम मसीह के जैसे और उसके निकट रहने वाले बनना चाहते हैं तो हमें सारा दिन उसी पर विचार करते रहने की आवश्यकता है!

इसके इलावा यह वचन विशेष रूप में दो आवश्यकताएं बनाता है:

पहली हमारे लिए मसीह के वचनों में बने रहना आवश्यक है। आरम्भ में हमें मसीह के वचन से ही शुद्ध किया जाता है: ''तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो'' (यूहन्ना 15:3)। मसीह के निकट बने रहने की चिंता करने से पहले हमें उस के साथ जुड़ना आवश्यक है। फल लाने से पहले हमें जीवन का अनुभव होना आवश्यक है। वह सम्बन्ध हमारा विश्वास और आज्ञापालन यानी उस में यकीन करके अपने पापों से फिरकर, उसके नाम का अंगीकार करके और उस में बपतिस्मा लेकर बनता है। परन्तु हमारा सम्बन्ध उसके साथ उसके वचन के द्वारा नहीं है, हम उसमें उसके वचन को मानकर या मसीह के वचन को अपने अन्दर बसने देकर भी बने रहते हैं। यूहन्ना कहता है, ''यदि तुम मुझ में बने रहो, *और मेरी बातें तुम में बनी रहें* तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा'' (यूहन्ना 15:6)। *परमेश्वर के वचन को समझे और जाने बिना मसीह के साथ कोई वास्तविक एकता या वास्तविक आत्मिकता नहीं है।*

दूसरा, और इससे भी अधिक निकटता से जुड़ा, वचन हमें मसीह की आज्ञाओं को मानने की आवश्यकता बताता है: ''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उसके प्रेम में बना रहता हूं'' (यूहन्ना 15:10)। यदि आप मसीह के निकट बने रहना चाहते हैं तो यह बिल्कुल आवश्यक है कि वह जो कुछ चाहता है आप वही करें।

हम सब उन कुछ लोगों को जानते हैं जो धर्म में बड़े जोशीले होते हैं यानी जिन्हें लगता है कि वे मसीह के बहुत करीब हैं, जो निरन्तर अपने उद्धार की ''जांच'' करते रहते हैं। हम उनके जोश और उत्साह की सराहना करते हैं पर हमें आश्चर्य है कि क्या उन्होंने उसकी आज्ञाओं को मानकर सचमुच में प्रभु की बात मानी है? वे उन लोगों की तरह हो सकते हैं जिनके विषय में यीशु ने मत्ती 7:21-23 में कहा था:

जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुत से मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत आश्यर्कर्म नहीं किए? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ।

मसीह के साथ बने रहने का हमारा उद्देश्य क्या है? स्पष्टतया हमें मसीह से जुड़े रहने में नाकाम रहने के परिणामों के कारण उससे जुड़े रहना आवश्यक है। यदि हम उस में बने नहीं रहते तो: (1) हम फल नहीं ला सकते: ''तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते'' (यूहन्ना 15:4)। (2) हम कुछ नहीं कर सकते: ''मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5)। (3) हम काट डाले जाएंगे: ''यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता है ...'' (यूहन्ना 15:6)।

मसीह के साथ हमारे निकट सम्बन्ध का उद्देश्य

हम मसीह के निकट क्यों हैं? अपनी निकटता या अपनी आत्मिकता पर शेखी मारने के योग्य होने के लिए? उस सम्बन्ध में उसे किसी के साथ न बांटने की मंशा से रंगरलियां बनाने के लिए? नहीं। यह वचन हमें सिखाता है कि हमारे जुड़ने का मकसद फल लाना है। अंगूर की बेल की टहनी होने का क्या उद्देश्य है? अंगूर की टहनी किस लिए होती है? अंगूर लगने के लिए! जैसे कपास की डंडी का पौधे से जुड़े रहना कपास उपजाने के लिए और आड़ू के पेड़ पर शाखा का होना आड़ू लगने के लिए होता है। यदि हम फल नहीं लाते तो हम अपना उद्देश्य पूरा नहीं करते हैं।

यह वचन से उससे अधिक कहलवाना हो सकता है जो यह कहना चाहता है, परन्तु कम से कम यह ध्यान देना दिलचस्प है दाखलता और डालियों में पारस्परिक सम्बन्ध है। दाखलता डालियों के लिए भोजन और आहार अर्थात जल और पोषक तत्व उपलब्ध कराती है। परन्तु दाखलता अपने आप फल नहीं दे सकती। यदि हम पौधे के उद्देश्य पर विचार करें तो उसका उद्देश्य बिना टहनियों के पूरा नहीं हो सकता। आत्मिक दाखलता और टहनियों में भी यही है: (1) दाख से ही जीवन मिलता है। (2) आहार दाखलता से मिलता है। पर बिना हमारे यीशु संसार में उस सब को पूरा नहीं कर सकता जो वह करना चाहता है। उदाहरण के लिए वह खोए हुए को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया, परन्तु बिना हमारे सहयोग यानी हमारे सुसमाचार को सुनाए वह खोए हुओं का का उद्धार नहीं कर सकता।

फल लाना हमारी जिम्मेदारी है, इस कारण हमें पूछना चाहिए कि हम क्या फल लाएं? इसके कई सम्भावित उत्तर हैं। नया नियम ''आत्मा के फल'' (गलातियों 5:22, 23), और ''ज्योति का फल'' (इफिसियों 5:9), और ''धार्मिकता का फल'' (फिलिप्पियों 1:11; याकूब 3:18) की बात करता है।

यूहन्ना 15 की एक और व्याख्या है कि हम दूसरों को अपने जैसे बनाएं। यह अन्य वचनों के साथ मले खाता भी है जो मसीह के लिए फल लाने के लिए दूसरों को परिवर्तित करने का

सुझाव देते हैं (देखें रोमियों 1:13; फिलिप्पियों 1:22; 4:17)। निश्चित रूप से हम इन वचनों को हठ धर्मिता से या यूं कहें कि यदि हम दूसरों को मसीह में परिवर्तित करने की इच्छा नहीं रखते अर्थात फल नहीं लाते तो हमें ''डाली की नाईं फेंक दिया जाएगा'' और ''आग में झोंक'' दिया जाएगा और हम ''जल'' जाएंगे (यूहन्ना 15:6)। अभी भी हम कह सकते हैं कि जहां तक हो सके, अवसर मिलने पर हमें दूसरों को मसीह में लाने के लिए पूरी कोशिश करने की आवश्यकता है। कहने का अर्थ यह है कि प्रभु हम से केवल ''अच्छा'' बनने की अपेक्षा नहीं रखता। हम ''अच्छे'' हो सकते हैं, परन्तु ''किसी काम के नहीं'' हो सकते। मसीह में हमारे बने रहने का पता हमें और दूसरों को लगना चाहिए।

परन्तु यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि यीशु हम से केवल थोड़ा सा फल लाने की इच्छा नहीं करता! इस वचन में फल लाने के चार दर्जों पर ध्यान दें: (1) *बिना फल के:* ''जो डाल मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है ...'' (आयत 2)। (2) *फल:* ''... और जो फलती है, उसे वह छांटता है, ...'' (आयत 2)। (3) *और फल:* ''... ताकि और फले'' (आयत 5)। (4) *बहुत फल:* ''जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है'' (आयत 5); ''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे'' (आयत 8)। आप इस पैमाने पर कहां है? जब तक हम ''चौथे दर्जे'' तक पहुंचने के लिए अपनी पूरी कोशिश रहीं करते तब तक प्रभु पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होता।

प्रभु हमें और फल लाने के योग्य कैसे बनाता है? यूहन्ना 15:2 कहता है: ''... जो फलती है, उसे छांटता है ताकि और फले।'' वह इसे छांटता है! छांटना कष्टदायक हो सकता है! कुछ बातें जो आपके साथ घटी हैं हो सकता है कि वह आप को ''छांटने'' का परमेश्वर का ढंग हो ताकि आप और फल ला सकें। हानि, बिमारी, निराशा ये सब आपको और फलदायक होने में आपकी सहायता के लिए परमेश्वर का ढंग हो सकता है।

मसीह के साथ निकटता से जुड़े होने का हमारा परिणाम

यदि हम ''मसीह में बने रहते'' हैं तो इसका परिणाम क्या होगा? (1) यीशु कहता है कि हम बहुत फल लाएंगे (15:5)। (2) हमें जो चाहिए मांगने पर मिल जाएगा: ''यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा'' (यूहन्ना 15:7)। (3) परमेश्वर की महिमा होगी: ''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे'' (यूहन्ना 15:8)। (4) हम मसीह के प्रेम में बने रहेंगे (यूहन्ना 15:10)। मसीह सबसे प्रेम करता है, परन्तु जो मसीह की आज्ञाओं को मानते और उसकी नज़दीकी में बने रहते हैं वे उसके प्रेम का लाभ उठाते रहते हैं। (5) हमारा आनन्द पूरा हो जाएगा। यीशु इस वचन को यह कहते हुए समाप्त करता है, ''मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए'' (यूहन्ना 15:11)। यीशु चाहता है कि हम प्रसन्न रहें। हम प्रसन्न कैसे रह सकते हैं? मसीह के साथ अपना सम्बन्ध बनाए रखकर! यदि हम मसीह की नज़दीकी में बने रहें, तो हम फलदायक होंगे, हम जो चाहेंगे हमें मिल जाएगा, हम परमेश्वर की महिमा करेंगे, हम मसीह के प्रेम में बने रहेंगे, और हम आनन्द से भरे होंगे! हो सकता है जब मसीह के साथ अपनी निकट सम्बन्ध को बनाए

रखने में असफल रहें तो हम आत्मिक रूप में निराशा महसूस करें।

सारांश

मसीह के साथ की नज़दीकी में बने रहना जीवन और मरन का मसला है। क्या कोई बिना दिल के जीवित रह सकता है? क्या कोई कार बिना मोटर के चल सकती है? क्या कोई टहनी उस दाखलता से जुड़े बिना रह सकती है जिसको उससे जीवन मिलता है? क्या कोई मसीही मसीह से जुड़े बिना जीवित रह सकता है। वैसे ही कोई मसीही बना मसीह से जुड़े जीवित नहीं रह सकता। वह हमारी सामर्थ का स्रोत है जो हमें सामर्थ देता जिससे हमें आत्मिक अस्तित्व के तत्व मिलते हैं, जो हमारे जीवन का मूल और उद्देश्य है यानी हमारा हृदय। मसीह की नज़दीकी में बने रहें! उससे कटे नहीं!

एक छोटी झील पर नांव से मछलियां पकड़ते दस और छह साल दो भाइयों की कल्पना करें। छह साल वाले लड़के की कुंडी में मछली लग जाती है और रोमांचित होते हुए वह उठ खड़ा होता है और नांव उलट जाती है। वह तैरना नहीं जानता पर उलटी हुई नांव तक पहुंचकर उसे पकड़ देता है। दस साल वाला लड़का भी नांव को पकड़े हुए हैं। अब वे क्यों करें? कोई सहायता मिलती दिखाई नहीं देती। बड़ा लड़का अच्छा तैर लेता है और किनारा केवल एक सौ फुट दूर है, परन्तु वह अपने भाई को किनारे तक नहीं ले जा सकता। अन्ततः वह किनारे तक तैरकर सहायता लेने का निर्णय लेता है। और वह तैर जाता है। किनारे पर चढ़ते हुए वह अपने छोटे भाई को देखता है जो नांव को बड़ी मुश्किल से पकड़े हुए है और चिल्ला रहा है: ''कस कर पकड़ो छोड़ना मत!'' फिर वह जल्दी से किसी को ढूंढ़ने भागता है। दस मिनट बाद वह कई लोगों को साथ लेकर वापस आता है जो उसके भाई को सुरक्षित निकाल सकते हैं। परन्तु लड़का तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा। वह थक गया था और उसका हाथ छूट गया, जिस कारण वह खो गया यानी उस झील के गंधले पानी में डूब गया।

उसके लिए, हाथ छोड़ने का अर्थ विनाश था। और मसीही व्यक्ति के लिए मसीह का हाथ छोड़ने का अर्थ नष्ट हो जाना है।

यदि आप मसीह में नहीं हैं, तो आप आज ही उसके साथ निकट सम्बन्ध का अनुभव लेना आरम्भ कर सकते हैं। यानी आप एक टहनी के रूप में उसकी दाखलता के रूप में मसीह के साथ जुड़ सकते हैं!

टिप्पणी

[1]रू पोर्टर, *क्रिश्चियन वर्कर,* 10 जनवरी 1951.